पाठ-2

कश्मीरी सेब

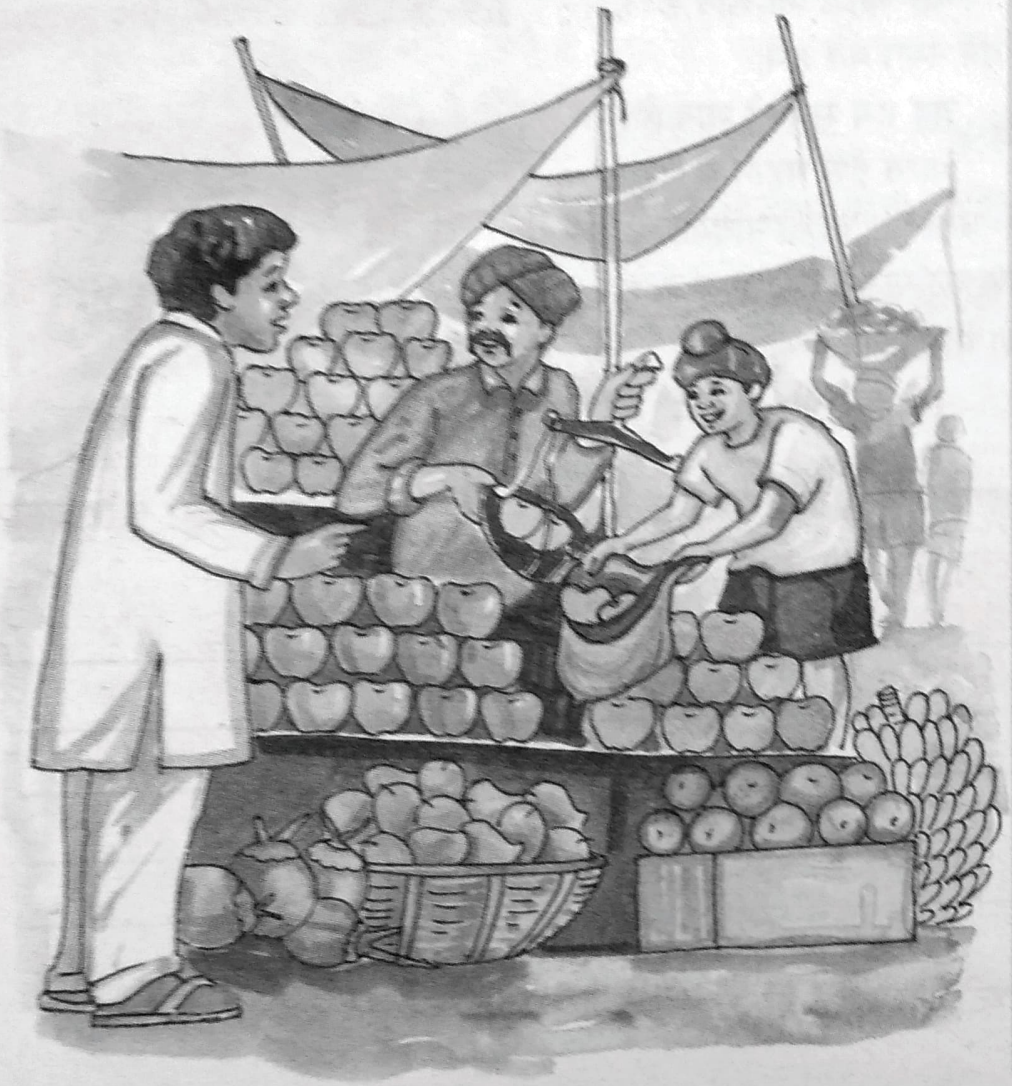

'कश्मीरी सेब' प्रेमचंद की एक छोटी-सी पर बड़ी ही प्रासंगिक और शिक्षाप्रद कहानी है। अपनी असावधानी के कारण ग्राहक किस प्रकार दुकानदार की मीठी-मीठी बातों से ठगा जाता है- कहानी में इसका रोचक वर्णन है। दुकानदार की बातों पर भरोसा करके जिस खुशी से लेखक सेब खरीदकर घर लाए थे, सुबह उन सेबों को देखने के बाद उनकी खुशी गायब हो जाती है। सड़े हुए सेबों को देखकर उन्हें ठगे जाने का अहसास होता है। यह बात बिल्कुल सही है कि कोई भी सामान खरीदते समय यदि हम सावधानी नहीं बरतेंगे, ठीक से देख-परखकर नहीं खरीदेंगे तो लेखक की तरह हमें भी 'कश्मीरी सेब' ही मिलेंगे। इसलिए कहानीकार प्रकारांतर से कहना चाहते हैं कि ''जागो ग्राहक जागो''।

कल शाम को चौक में दो-चार जरूरी चीजें खरीदने गया था। पंजाबी मेवाफरोशों की दुकानें रास्ते ही में पड़ती हैं। एक दुकान पर बहुत अच्छे रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए नजर आए। जी ललचा उठा। आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टमाटो को पहले कोई सेंत में भी न पूछता था। अब टमाटो भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबों के पेट भरने की चीज थी। अमीर लोग तो उसका हलवा ही खाते थे, मगर अब पता चला है कि गाजर में भी बहुत विटामिन है, इसलिए गाजर को भी मेजों पर स्थान मिलने लगा है। और सेब के विषय में तो कहा जाने लगा है कि एक सेब रोज खाइए तो आपको डॉक्टरों की जरूरत न रहेगी। डॉक्टर से बचने के लिए हम नीमकौड़ी तक खाने को तैयार हो सकते हैं। सेब तो रस और स्वाद में अगर आम से बढ़कर नहीं है, तो घटकर भी नहीं है। हाँ, बनारस के लंगड़े और लखनऊ के दसहरी और मुंबई के अल्फाँसो की बात दूसरी है। उनके टक्कर का फल तो संसार में दूसरा नहीं है। मगर उनमें विटामिन और प्रोटीन है या नहीं, है तो काफी

है या नहीं, इन विषयों पर अभी किसी पश्चिमी डॉक्टर की व्यवस्था देखने में नहीं आई। सेब को यह व्यवस्था मिल चुकी है। अब वह केवल स्वाद की चीज नहीं है, उसमें गुण भी है। हमने दुकानदार से मोल-भाव किया और आध सेर सेब माँगे।

दुकानदार ने कहा- बाबूजी, बड़े मजेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी।

मैंने रूमाल निकालकर उसे देते हुए कहा - चुन-चुनकर रखना।

दुकानदार ने तराजू उठाई और अपने नौकर से बोला- लौंडे, आध सेर सेब निकाल ला। चुनकर लाना।

लौंडा चार सेब लाया। दुकानदार ने तौला, एक लिफाफे में उन्हें रखा और रूमाल में बांधकर मुझे दे दिया। मैंने चार आने उसके हाथ में रखे।

घर आकर लिफाफा ज्यों-का-त्यों रख दिया। रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं है। फल खाने का समय तो प्रात:काल है। आज सुबह मुँह-हाथ धोकर जो नाश्ता करने के लिए एक सेब निकाला, तो सड़ा हुआ था। एक रुपए के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दुकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर यह आधा सड़ा हुआ था। अब संदेह हुआ, दुकानदार ने मुझे धोखा तो नहीं दिया! तीसरा सेब निकाला। यह सड़ा तो न था, मगर एक तरफ दबकर बिल्कुल पिचक गया था। चौथा देखा। वह यों तो बेदाग था, मगर उसमें एक काला सूराख था, जैसा अक्सर बेरों में होता है। काटा तो भीतर वैसे ही धब्बे, जैसे किड़हे बेर में होते हैं। एक सेब भी खाने लायक नहीं। चार आने पैसों का इतना गम न हुआ, जितना समाज के इस चारित्रिक पतन का। दुकानदार ने जान-बूझकर मेरे साथ धोखेबाजी का व्यवहार किया। एक सेब सड़ा हुआ होता, तो मैं उसको क्षमा के योग्य समझता। सोचता, उसकी निगाह न पड़ी होगी। मगर चारों के चारों खराब निकल जाएँ, यह तो साफ धोखा है।

मगर इस धोखे में मेरा भी सहयोग था। मेरा उसके हाथ में रूमाल रख देना मानो उसे धोखा देने की प्रेरणा थी। उसने भाँप लिया कि यह महाशय अपनी आँखों से काम लेने वाले जीव नहीं हैं और न इतने चौकस हैं कि घर से लौटाने आएँ। आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करता। किसी थाने, कचहरी या म्युनिसिपलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों

तौल में चाहे छटाँक-आध-छटाँक कस लें, लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस के नोट दे आते तो आपको घबड़ाने की कोई जरूरत न थी। आपके रुपए सुरक्षित थे। मुझे याद है, एक बार मैं मुहर्रम के मेले में एक खोमचेवाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई तो खोमचेवाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित से अठन्नी लौटा दी और उलटे मुझसे क्षमा माँगी। और यहाँ कश्मीरी सेब के नाम से सड़े हुए सेब बेच जाते हैं! मुझे आशा है, पाठक बाजार में जाकर मेरी तरह आँखें न बंद कर लिया करेंगे। नहीं तो उन्हें भी कश्मीरी सेब ही मिलेंगे।

- प्रेमचंद

आओ, जानें :

प्रेमचंद हिंदी के कहानीकारों में सबसे लोकप्रिय कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में महत्वपूर्ण संदेश छिपे होते हैं। इनका जन्म 1880 ई. में काशी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनका असली नाम धनपत राय था। पिताजी उन्हें प्यार से नवाब राय कहते थे। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियों और 14 उपन्यासों की रचना की थी। 1936 ई. में इनका स्वर्गवास हुआ। उनकी कुछ रचनाएँ इस प्रकार हैं-

उपन्यास : *सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान* आदि।

कहानियाँ : *बूढ़ी काकी, परीक्षा, सवा सेर गेहूँ, शतरंज के खिलाड़ी, कजाकी, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, कफ़न* आदि।

अभ्यास-माला

पाठ से :

1. 'कश्मीरी सेब' कहानी को पढ़कर अपने शब्दों में सुनाओ।

2. किसने कहा, किससे कहा ?

(क) ''बाबूजी, बड़े मजेदार सेब आए हैं।''

(ख) ''सेब चुन-चुनकर रखना।''

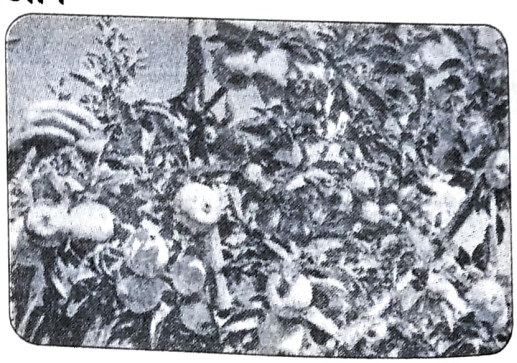

3. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(क) दुकान पर किस रंग के सेब सजे हुए थे ?

(ख) बनारस किस आम के लिए प्रसिद्ध है ?

(ग) लेखक ने दुकानदार से कितने सेब माँगे।

(घ) लेखक ने दुकानदार को कितने पैसे दिए ?

(ङ) फल खाने का उपयुक्त समय क्या है ?

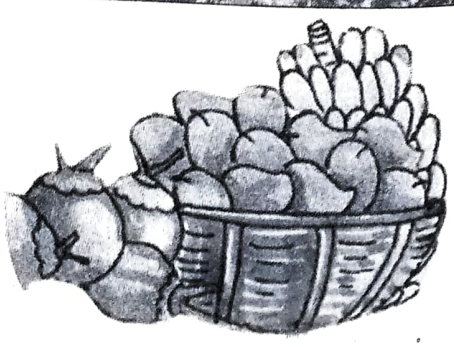

4. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(क) हमारे बदले हुए खाद्याभ्यास के बारे में लेखक का क्या विचार है ?

(ख) सेब खाने के क्या-क्या लाभ हैं ?

(ग) लेखक ने प्रात:काल खाने के लिए जब सेब निकाले तो वे किस हालत में मिले ?

(घ) दुकानदार को लेखक से बेईमानी करने का अवसर कैसे मिला ?

(ङ) खोमचेवाले की ईमानदारी के बारे में लेखक ने क्या कहा है ?

(च) इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

5. ''चार पैसों का इतना गम न हुआ, जितना समाज के इस चारित्रिक पतन का।''- लेखक ने किस परिस्थिति में ऐसा कहा है ?

6. सत्य कथन के सामने ☑ और असत्य कथन के सामने ☒ का निशान लगाओ :

(क) गाजर में अधिक विटामिन पाया जाता है। ☐

(ख) अल्फाँसो सेब की एक किस्म है। ☐

(ग) फल खाने का सही समय रात है। ☐

(घ) चौथे सेब में एक काला सूराख था। ☐

(ङ) दुकानदार ने लेखक को बढ़िया सेब दिए थे। ☐

(च) आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। ☐

(छ) लेखक ने दुकानदार को सेब की कीमत के रूप में चार आने पैसे दिए थे। ☐

(ज) एक सेब भी खाने लायक नहीं था। ☐

(झ) सभी दुकानदार बेईमानी करते हैं। ☐

(ञ) खोमचेवाले ने लेखक की अठन्नी नहीं लौटायी। ☐

पाठ के आस-पास :

1. बाजार में बिकनेवाले सामानों के दाम हमेशा घटते-बढ़ते रहते हैं। तुम इन परिवर्तनों को किस प्रकार देखते हो ? इसे रोकने के लिए तुम क्या करोगे, आपस में चर्चा करो।

2. हमारे खान-पान, रहन-सहन और परिधानों में भी बदलाव आ रहा है। इस बदलाव के पक्ष-विपक्ष में बात-चीत करो और उसके आधार पर एक लेख तैयार करो।
3. क्या तुम कभी कोई सामान खरीदते समय ठगे गए हो ? यदि हाँ तो कब और कैसे ? लगभग 100 शब्दों में अपने अनुभव लिखो।
4. दुकानदार ग्राहकों को किस प्रकार ठगता है ? लगभग पाँच-छः वाक्यों में लिखो।
5. कोई वस्तु खरीदते समय हम ठगे न जाएँ- इसके लिए हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

भाषा-अध्ययन :

1. दिए गए उदाहरण को देखकर निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाओ :

सुबह = करीम **शाम** को घर लौटता है।
अमीर =
पश्चिम =
हानि =
आशा =

2. आओ, एक बार फिर याद करें :

तुमलोग जानते हो कि संज्ञाओं के मूलतः तीन भेद माने जाते हैं -

(क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक (ग) भाववाचक

वस्तुतः संज्ञा शब्दों के अन्य दो भेद वस्तुवाचक और समूहवाचक संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, प्राणी आदि का बोध होता है उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे - जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मंत्री थे।
दिल्ली भारत की राजधानी है।

(ख) जातिवाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु आदि की पूरी जाति का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे - गाय उपकारी जानवर है।
पुस्तक से हमें ज्ञान प्राप्त होता है।

(ग) भाववाचक संज्ञा : जिन संज्ञा शब्दों से किसी भाव, गुण, दशा, कार्य आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे - दोस्तों की सहायता अवश्य करनी चाहिए।
फुलवारी की सुंदरता मन मोह लेती है।

अब निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़ो और उसमें से संज्ञाएँ छाँटकर दी गई तालिका में लिखो:

रामू का गाँव गंगा नदी के किनारे था। एक दिन रामू शहर से अपने गाँव लौट रहा था। रास्ते में उसे जोरों की भूख और प्यास लगी। कुछ दूरी पर उसे एक बड़ा-सा पेड़ दिखाई दिया। पेड़ के नीचे लोगों की भीड़ लगी थी। एक आदमी पके-पके आम बेच रहा था। आम की मिठास से रामू की भूख तेज हो गई। उसके पास कुछ सिक्के थे। उसने दो बड़े आम खरीदकर खाए। उसने पास ही में रखे पीतल के घड़े से पानी लेकर पीया और चल पड़ा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा

इसी तरह तुम संज्ञा शब्दों से एक अन्य तालिका बनाओ और शिक्षक-शिक्षिका को दिखाओ।

3. इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :

काला कुत्ता दौड़ रहा है। मेरे विद्यालय में पंद्रह कमरे हैं। यह ऊँचा पेड़ है। गिलास में थोड़ा दूध है। वह लड़का खेल रहा है।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द संज्ञा की विशेषता बता रहे हैं। जैसे- 'काला' कुत्ते की विशेषता बता रहा है। उसी तरह 'ऊँचा' पेड़ की विशेषता बता रहा है। 'थोड़ा' दूध की मात्रा या परिमाण बता रहा है। उसी प्रकार 'वह' शब्द लड़के की विशेषता बता रहा है। इन्हें **विशेषण** कहते हैं। विशेषण के मुख्यत: चार भेद हैं- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सर्वनामवाचक या सार्वनामिक विशेषण।

अब निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़ो और उसमें से विशेषण शब्दों को छाँटकर फिर से लिखो। प्रत्येक विशेषण शब्द के भेद का भी साथ में उल्लेख करो :

रोहन एक अच्छा लड़का है। वह मधुर स्वर से गीत गाता है। उसके पास गीतों के बारह संकलन हैं। सरिता भी अच्छी लड़की है। वह बढ़िया नाचती है। उसका नृत्य देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। दोनों को कई पुरस्कार भी मिले हैं।

4. **'चुन-चुनकर सेब रखना'- इस वाक्य में एक ही क्रिया पद 'चुनना' दो बार आया है। अब तुम उदाहरण को देखकर निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाओ :**

खा-खाकर = राम खा - खाकर मोटा हो गया है।

रो-रोकर = ...

दौड़-दौड़कर = ...

बोल-बोलकर = ...

मार-मारकर = ...

रह-रहकर = ...

5. **पास के वृत्त में दिए गए विशेषण शब्दों से खाली स्थानों को भरो :**

पांडव ....भाई थे। एक दिन .... गर्मी थी। वन में पांडवों को .... जोर की प्यास लगी। आस-पास जल का अभाव था। .... वृक्षों के कारण दूर तक देखना मुश्किल था। तब नकुल ने एक .... पेड़ पर चढ़कर देखा कि .... दूर पर जल से भरा एक .... तालाब है। उसे दूर से उड़कर आता एक .... पक्षी दिखाई दिया।

पाँच **ऊँचे** **घने** **बड़ा** **थोड़ी** **बड़े** **छोटा** **बहुत**

योग्यता-विस्तार :

1. प्रेमचंद की 'परीक्षा' कहानी का संग्रह करके पढ़ो और शिक्षक की सहायता से उसे समझने का प्रयास करो।
2. 'ग्राहक सुरक्षा' विषय पर अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो।
3. आम की तरह सेब और केले की भी कई किस्में होती हैं। शिक्षक की सहायता से उनकी जानकारी प्राप्त करो।
4. दुकानदार वस्तु की नाप-तौल, संख्या या गिनती में कम देकर अथवा बढ़िया वस्तु के स्थान पर घटिया वस्तु देकर पैकिंग करके ग्राहकों को ठगता है। कुछ ऐसी वस्तुओं की एक तालिका बनाओ, जिनमें दुकानदार ग्राहकों को ठग सकता है।

ऐसी सावधानियाँ रखें :

1. *'ग्राहक अधिकार' एवं 'ग्राहक सुरक्षा' पर ध्यान दें।*
2. *वस्तुओं के पैकेट पर छपे वजन, निर्माण की तारीख, गुणवत्ता, समाप्त होने की तारीख और मूल्य देख लें।*
3. *दवाओं के पैकेटों या बोतलों पर छपे वजन, बैच नंबर, निर्माण-तिथि, गुणवत्ता समाप्ति तिथि और अधिकतम खुदरा मूल्य देखकर ही खरीदें।*
4. *फल-सब्जियों को खरीदते समय यह देख लें कि वे ताजे है या नहीं। स्थानीय हैं या बाहर से मंगाए गए हैं। वे सड़े हुए न हों और दुकानदार सही तौल रहा है अथवा नहीं।*
5. *कुछ वस्तुएँ संख्या के हिसाब से बिकते हैं। अत: ऐसी वस्तुएँ खरीदते समय उनकी सही संख्या गिनकर ही लें।*

'जागो ग्राहक जागो'

परियोजना कार्य :

आजकल उपभोक्ताओं को जागरूक बनाने के लिए टी.वी. पर अनेक विज्ञापन प्रसारित होते हैं। उनमें से 'जागो ग्राहक जागो' ऐसा ही एक विज्ञापन है। तुम किसी एक अन्य विज्ञापन के बारे में अपने सहपाठियों से चर्चा करो और संक्षेप में एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ
चौक	=	चौराहा
मेवाफरोश	=	सूखे या ताजे फल बेचने वाला
टमाटो	=	टमाटर
सेंत	=	मुफ्त
नीमकौड़ी	=	नीम का फल
आध	=	आधा
तबीयत खुश होना	=	बहुत आनंद आना
लौंडा	=	दुकान में काम करने वाला लड़का
कायदा	=	नियम, व्यवस्था
सूराख	=	छेद
गम	=	दु:ख

शब्द		अर्थ
चौकस	=	सावधान
छटाँक	=	सेर के सोलहवें भाग की एक तौल (अब यह प्रचलन में नहीं है)
तराजू	=	वस्तु का वजन मापने या तौलने का एक उपकरण
किड़हे	=	कीड़े लगे हुए
निगाह	=	नजर
भाँप लिया	=	समझ लिया
दुर्गति	=	दुर्दशा
साख	=	श्रेय, महत्व